EMPIRICISM
अनुभववाद

SOGHRA COLLEGE
BIHAR SHARIF
NALANDA

Paper - II (H)
(H)

Q. ज्ञान के सिद्धान्त के रूप में 'अनुभववाद' की समीक्षा।
Explain The 'Empiricism' as a theory of knowledge.

A→ अनुभववाद वह ज्ञानशास्त्रीय सिद्धान्त है जो अनुभव ज्ञानइन्द्रियानुभूति को ही यथार्थ ज्ञान का एकमात्र साधन मानता है। यह बुद्धिवाद का पूर्ण विरोधी सिद्धान्त है। ज्ञान के निर्माण में यहाँ बुद्धि को कोई महत्व नहीं दिया जाता।

अनुभववाद के समर्थक — बुद्धिवाद की भाँति अनुभववाद भी अति प्राचीन सिद्धान्त है। प्राचीन ग्रीक दर्शन में प्रोटागोरस (Protagoras) तथा जेनो (Zeno) अनुभववाद के स्पष्ट समर्थक हैं। इनके अनुसार इन्द्रियानुभव (Sense experience) ही यथार्थ ज्ञान का एकमात्र स्त्रोत है। आधुनिक युग में बेकन (Bacon) तथा हॉब्स (Hobbes) के दर्शनों में अनुभववाद का समर्थन दीख पड़ता है। परन्तु, इसे एक विकसित सिद्धान्त का रूप देने का श्रेय जॉन लॉक (John Locke) को प्राप्त है।

लॉक का अनुभववाद - पश्चात्य दर्शन में सर्वप्रथम लॉक ने अनुभववाद को पूर्ण ज्ञानमीमांसा का रूप दिया। इन्होंने तार्किक युक्तियों के द्वारा जन्मजात प्रत्ययों (Innate ideas) के सिद्धान्त का खण्डन किया। इसके अनुसार जन्म के समय मनुष्य का मन बिल्कुल रिक्त रहता है। उसमें सभी प्रत्यय अनुभव द्वारा आते हैं। ज्ञान के प्राथमिक निर्माणिक तत्व प्रत्यय हैं। प्रत्यय दो प्रकार के हैं— सरल प्रत्यय (Simple ideas) तथा जटिल प्रत्यय (Complex ideas). सरल प्रत्यय अनुभव द्वारा प्राप्त होते हैं। इन्हीं सरल प्रत्ययों को

Scanned by CamScanner

मिलाकर बुद्धि जटिल प्रत्ययों का निर्माण करती है। इस प्रकार अनुभव द्वारा ही मन मे प्रत्यय पहुँचते हैं। लॉक ने सभी प्रत्ययो को अनुभव द्वारा प्राप्त बतलाया है। उनका स्पष्ट कहना है- "ऐसी कोई भी वस्तु हमारी बुद्धि में नही है, जो पहले अनुभव में न हों" (There is nothing in our intellect which was not Previously in our Sense)

बर्कले का अनुभववाद - लॉक के अनुभववाद को संगत (consistent) बनाने का कार्य बर्कले ने किया। बर्कले के अनुसार अनुभव हमें केवल प्रत्ययों (ideas) का होता है प्रत्येक वस्तु कुछ प्रत्ययों का समूह है। इसलिए, केवल प्रत्यय वास्तविक है। इस आधार पर किसी भौतिक द्रव्य को मानने की कोई आवश्यकता नहीं है किसी वस्तु का विश्लेषण करने पर वह गुणों के योग के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। ये गुण अनुभवकर्ता पर निर्भर है। अतः वस्तुओं का अस्तित्व भी अनुभवकर्ता पर आश्रित है इसे उन्होंने अपने प्रसिद्ध सूत्र के द्वारा व्यक्त किया है - "किसी वस्तु का अस्तित्व अनुभवकर्ता या ज्ञाता के अनुभव पर निर्भर है" इस प्रकार बर्कले का अनुभववाद आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद में परिणत हो जाता है।

अनुभववाद की सामान्य विशेषताये :-

अनुभववाद की कुछ ऐसी विशेषताये हैं जिन्हे सभी अनुभववादी एक स्वर से स्वीकार करते हैं जो निम्नलिखित हैं:-

(i) अनुभववाद के अनुसार ज्ञान का एकमात्र साधन अनुभव (Experience) है। बुद्धि या विवेक के द्वारा यथार्थ ज्ञान नहीं मिल सकता। यहाँ अनुभव का अर्थ इंद्रियानुभव (Sense experience) है।

(ii) इसके अनुसार व्यावहारिक जीवन में हमें जो विशिष्ट पदार्थों के विषय में ज्ञान होता रहता है वह मिथ्या (invalid) नहीं है बल्कि यह यथार्थ ज्ञान का उदाहरण है।

Scanned by CamScanner

(iii) ज्ञान के प्रारंभिक निर्माणिक तत्वों (अर्थात प्रत्ययों) को प्राप्त करने में संवेदनशक्ति को कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता। संवेदना हमें सहज ढंग से प्राप्त होते रहते हैं। लॉक का कहना है कि जिस प्रकार दर्पण को किसी की तस्वीर दिखाने में कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती ठीक उसी प्रकार संवेदनशक्ति संवेदनों को निष्क्रिय ढंग से प्राप्त करती रहती है

(iv) इस सिद्धान्त के अनुसार मन में कोई भी प्रत्यय जन्मजात (innate) नहीं है। सभी प्रत्यय अनुभव द्वारा प्राप्त या अर्जित (acquired) हैं। सम्पूर्ण ज्ञान इन्हीं अर्जित प्रत्ययों में निहित है

(v) ज्ञान के प्रारंभिक तत्व- प्रत्यय (ideas) हैं, जो अनुभव द्वारा प्राप्त होते हैं। इन्हीं प्रत्ययों के योग से ज्ञान निर्मित होता है।

(vi) इस सिद्धान्त के अनुसार ज्ञान की पद्धति आगमनात्मक (inductive) है। अनुभव हमें केवल विशेषों का होता है। अनुभववाद के अनुसार सामान्य या सार्वभौम निर्णयों के आधार पर आगमनात्मक विधि द्वारा संभव हैं परन्तु ये सामान्य निर्णय अनिवार्य (necessary) न होकर संभाव्य (Probable) होते हैं

(vii) अनुभववाद ज्ञान में नवीनता (novelty or newness) को सर्व-प्रमुख मानता है। नवीनता के गुण ज्ञान में अनुभव द्वारा आते हैं, न की बुद्धि द्वारा। यह सिद्धान्त विकासशील एवं परिवर्तनशील ज्ञान में विश्वास रखता है। पुराने ज्ञान कभी कभी असत्य सिद्ध हो जाते हैं तथा उसके स्थान पर नूतन ज्ञान का उदय होता है।

मूल्यांकन (Evaluation)

अनुभववाद ज्ञान की उत्पत्ति में अनुभव या प्रत्यक्ष का महत्व बताकर एक प्रशंसनीय कार्य करता है। सभी ज्ञान अनुभवजन्य हैं, यही आधुनिक विज्ञानों का भी मत है।

Scanned by CamScanner

परन्तु इसने ज्ञान निर्माण में बुद्धि का स्थान स्वीकार कर कई कठिनाईयां उत्पन्न कर दी है। इसके कुछ प्रमुख दोष निम्नलिखित है:—

(i) अनुभववाद बुद्धिवाद की भाँति एकांगी सिद्धान्त है। ज्ञान की उत्पत्ति में अनुभव को एकमात्र साधन मानना तथा बुद्धि की पूर्ण उपेक्षा करना इसकी एकांगिता (onesidedness) का प्रतीक है। कांट (Kant) सरीखे विद्वानों का मत है कि ज्ञान के निर्माण में अनुभव तथा बुद्धि दोनों का सहयोग आवश्यक है। अतः बुद्धि की अवहेलना करना सर्वथा अनुपयुक्त है

(ii) अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान के सभी उदाहरण सत्य नहीं होते। कभी कभी इन्द्रियाँ हमें धोखा देती है। और अयाथार्थ ज्ञान भी यथार्थ जैसा दीख पड़ता है

(iii) अनुभववाद ज्ञान में केवल 'नवीनता' का गुण स्वीकार करता है यह सार्वभौम निर्णयों को तो स्वीकार करता है, परन्तु इन्हें अनिवार्य नहीं मानता। महान विचारक कांट के अनुसार यथार्थ ज्ञान में सार्वभौमिता, अनिवार्यता के गुणों का होना अनिवार्य है। सार्वभौमता एवं अनिवार्यता के गुण बुद्धि की देन हैं और नवीनता का गुण अनुभव द्वारा प्राप्त होता है। अतः यथार्थ ज्ञान केवल नवीन नहीं होता है, बल्कि सार्वभौम, अनिवार्य एवं नवीन होता है।

(iv) अनुभववादी, लॉक ने जन्मजात प्रत्ययों के सिद्धान्तों का खण्डन जिन तर्कों द्वारा किया है, वे निर्दोष नहीं है उनका कहना है कि यदि कुछ प्रत्यय मन में जन्म से विद्यमान रहते तो उनकी चेतना व्यक्ति को होनी चाहिए थी। परन्तु जन्मजात बच्चे एवं पागल ईश्वर के प्रत्यय की चेतना नहीं रखते। इसलिए लॉक ने जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन किया है

Scanned by CamScanner

को होनी ... चेतना
प्रत्यय की
खण्डन किया है

4.

(v) अनुभववादी विचारक अनुभव को संकीर्ण अर्थ मे प्रयुक्त करते हैं। इनके अनुभव का अर्थ इंद्रियानुभव (Sense experience) होता है परन्तु का यह संकुचित अर्थ है इन्द्रियानुभव के अतिरिक्त धार्मिक, आध्यात्मिक एवं रहस्यात्मक अनुभव भी कम महत्वपूर्ण नहीं है

(vi) अनुभववाद केवल आगमनात्मक विधि द्वारा ज्ञान प्राप्त करने का दावा करता है। इस विधि द्वारा सार्वभौम निर्णय का निर्माण भले ही संभव हो, परन्तु इनको व्यक्तिविशेष पर लागू करने के लिए निगमन विधि की आवश्यकता पड़ती है

(vii) यह सिद्धान्त ज्ञान प्राप्ति में मन को निष्क्रिय (Passive) मानता है यह अग्राह्य है। जहाँ तक संवेदनों के प्राप्त करने का प्रश्न है, वहाँ तक मन को निष्क्रिय कहा जा सकता है। परन्तु संवेदन को ही ज्ञान नहीं कहा जा सकता।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि ज्ञानशास्त्रीय सिद्धांत के रूप में अनुभववाद संतोषप्रद एवं निर्दोष सिद्धान्त नहीं कहा जा सकता

Scanned by CamScanner